बिना ईमानदारी कमाया हुआ धन छीन लेता है सुख-चैन

शांतिवन। आर्थिक धनोपार्जन हो या व्यापार सबमें सफलता के लिए मानवीय मूल्यों की ज़रूरत होती है। व्यापार में उतार-चढ़ाव के बीच जीवन में समानता बनाये रखने के लिए आध्यात्मिक ज्ञान ज़रूरी है। जब मुश्किलों का पल हो तो उसमें संतुलन के लिए एक ताकत की आवश्यकता होती है। उक्त विचार हीरो साइकिल समूह के मैनेजिंग डायरेक्टर पंकज मुंजाल ने ब्रह्माकुमारीज़ संस्थान के व्यापार एवं उद्योग प्रभाग द्वारा आयोजित व्यापारियों के सम्मेलन में रखे। उन्होंने ये भी कहा कि धन कमाना गुनाह नहीं है परंतु उसमें एक ऐसा संतुलन होना चाहिए जिससे किसी व्यक्ति को कोई कष्ट ना हो। और नफा-नुकसान में समान स्थिति के लिए राजयोग ध्यान करना ज़रूरी है। जब से ब्रह्माकुमारीज़ संस्थान के परिसर में आया हूँ तब से लग ऐसा रहा है कि किसी अन्य दुनिया में आ

गया हूँ। परमात्मा का ज्ञान मनुष्य का जीवन बदल देता है। इसलिए हमें अपने जीवन में उसे अपनाना चाहिए। ब्रह्माकुमारीज़ संस्थान की मुख्य प्रशासिका राजयोगिनी दादी रतनमोहिनी ने कहा कि सबसे बड़ा धन ज्ञान है। जिसके जीवन में ज्ञान धन है उसे स्थूल धन की भी कमी नहीं होती। क्योंकि स्थूल धन का आधार भी ज्ञान धन है। इसलिए यही भाव रखकर जीवन में आगे बढ़ना चाहिए। कार्यक्रम में ब्रह्माकुमारीज़ संस्थान की संयुक्त मुख्य प्रशासिका राजयोगिनी ब्र.कु. संतोष दीदी ने कहा कि हमारी जैसी आंतरिक स्थिति होगी वैसी ही दुनिया में हमें दिखाई देगी। ब्रह्माकुमारीज़ संस्थान के व्यापार एवं उद्योग प्रभाग की अध्यक्षा,मुम्बई राजयोगिनी ब्र.कु. योगिनी दीदी ने कहा कि जब हम व्यापार में होते हैं तो हमें ज़्यादा कमाने का लालच बुरे रास्ते पर धकेल देता है। इसलिए संतुष्टता की शक्ति कम हो जाती है। इसका नतीजा यह होता है कि हम धन तो कमाते हैं परंतु सुख और चैन का अभाव होता है। इसलिए जीवन में संतुष्टता लाने के लिए अपनी आंतरिक शक्ति को बढ़ाने की ज़रूरत है। प्रतिदिन जीवन में राजयोग को अपनाने का प्रयास करेंगे तो जीवन तनाव मुक्त हो जायेगा। कार्यक्रम में प्रभाग की मुख्यालय संयोजिका राजयोगिनी ब्र.कु. गीता दीदी, प्रभाग के एक्टिंग सदस्य ब्र.कु. राजसिंह सहित देश भर से आये व्यापार एवं उद्योग से जुड़े लोग भी उपस्थित रहे।

चाइना-संघाई। ब्रह्माकुमारीज़ के इनर पीस सेंटर द्वारा इंडियन कॉन्सुलेट के कॉन्फ्रेन्स हॉल में आयोजित 'ईज़ी मेडिटेशन फॉर बिज़ी पीपल' कार्यक्रम में डॉ. एन. नंदकुमार,कौंसल जनरल ऑफ इंडिया इन संघाई, ब्र.कु. सपना बहन तथा बड़ी संख्या में गणमान्य लोग शामिल रहे।

लंदन-यू.के.। न्यूमैन कैथोलिक चर्च में आयोजित कार्यक्रम में ब्रह्माकुमारीज़ के निःस्वार्थ सेवा एवं सभी नगरवासियों के लिए एक हिंसामुक्त और तनावमुक्त स्थान का निर्माण करने हेतु ब्रह्माकुमारीज़ वर्ल्ड स्पीरिचुअल यूनिवर्सिटी यूके को 'प्लेस ऑफ सेंचुरी, फेथ ऑफ सेंचुरी' अवॉर्ड से सम्मानित किया गया।

मिल्पिटास-सिलिकॉन वैली(यूएसए)। भारत की आज़ादी के अमृत महोत्सव के अंतर्गत ब्रह्माकुमारीज़ द्वारा फ्रेमोंट,कैलिफोर्निया में आयोजित कार्यक्रम व परेड में ब्र.कु. कुसुम बहन,डायरेक्टर,ब्रह्माकुमारीज़ सिलिकॉन वैली तथा अन्य ब्र.कु. भाई-बहनें बैनर्स व स्लोगन्स के साथ शामिल रहे।

न्यू यॉर्क-यूएसए। ब्रह्माकुमारीज़ के यूएन ऑफिस,न्यू यॉर्क सिटी में आयोजित 'इंटरफेथ लीडरशिप एंड सस्टेनेबल डेवलपमेंट' विषयक परिचर्चा में मोडरेटर रेवरेन्ड डेनिस स्कॉटो,स्क्वायर(चेयर,इंटरनेशनल डे ऑफ योगा कमेटी एट द यूएन), स्पीकर्स में किरण बाली,यूनाइटेड रिलीजन्स इनिशिएटिव, औद्रे कितागावा,जेडी(इंटरनेशनल एकेडमी फॉर मल्टीकल्चरल कोऑपरेशन), डॉ. अन्ना फ्रिश,रोट्री क्लब, ब्र.कु. गायत्री नारायणे,रीप्रेजेंटेटिव ऑफ ब्रह्माकुमारीज़ टू द यूनाइटेड नेशन्स, ब्र.कु. सबीता गीर,ब्रह्माकुमारीज़ यूएन तथा ब्र.कु. जुलिया ग्रिंडन,ब्रह्माकुमारीज़ यू.एन. आदि शामिल रहे।

आ गया है मौसम अपने प्रियतम से मिलने का

सच में कितने पद्मापदम भाग्यवान हैं हम, जो ईश्वर से हमने मुलाकात की है, मनभावनी सी मधुर बात की है! यह समय कितना मूल्यवान है हमारे लिए, जो हमने परमात्मा को पाया है, उनको पहचाना है। जिनको हम द्वापर से पुकारते आये, आज वह हमारे सम्मुख हैं। पहले शिव बाबा ने साकार रूप में ब्रह्मा बाबा के तन का आधार ले हमें पालना दी, शिक्षाएं दी तब बापदादा अव्यक्त रूप में हमें पालना दे रहे हैं। ये वादा है बाबा का कि मैं अंत तक तुम्हें ज्ञान खजाने से भरता रहूंगा। और वह छुट्टी नहीं लेते तो भला हम कैसे लें। अब अव्यक्त बापदादा मिलन का समय आ गया है। तो क्यों न अभी से स्वयं को तैयार करें जिससे हम बिल्कुल वही परमात्म प्यार की अनुभूति करें, जिस रीति बाबा लुटाते हैं। अव्यक्त बापदादा मिलन के कुछ नियम और मर्यादायें हैं जिनको हमें पूर्ण रीति पालन करना अनिवार्य है। तब ही हम वो प्राप्तियां कर सकेंगे। सर्वश्रेष्ठ नियम है परमात्म ज्ञान होना। जिसने सात रोज़ का कोर्स किया है वही अव्यक्त बापदादा मिलन मना सकता है। फिर जो नित्य परमात्म महावाक्यों को सुनता हो, अमृतवेला और नुमाशाम का योग करता हो। अब परमात्म महावाक्य तो अनेक ब्राह्मण आत्माएं सुनती हैं परन्तु धारण सिर्फ कुछ ही आत्माएं करती हैं। कहने का भावार्थ यहाँ ये है कि वो आत्मा चाहिए जो सिर्फ सुनता ही ना हो परन्तु धारण भी करता हो।

पवित्रता है ब्राह्मण जीवन का फाउण्डेशन। जिसका ये फाउण्डेशन पक्का हो, कम से कम एक वर्ष का वही इस मंगल मिलन को मनाने के लिए आ सकता है। कहते भी हैं,"जो लोग ईश्वर को पाना चाहते हैं, उन्हें वाणी, मन, इन्द्रियों की पवित्रता और एक दयालु हृदय की ज़रूरत होती है"। क्योंकि भगवान की महिमा है कि वो पवित्रता के सागर हैं तो विकारों की आग में जलने वाले व्यक्ति कैसे और क्या ही उनकी अनुभूति कर सकेंगे बल्कि वो तो वायुमंडल और ही दूषित कर देंगे और उस पाप का दंड बहुत ही कड़ा होगा। इसलिए जो सिर्फ ब्रह्मचर्य को पालन ही नहीं करते हों परन्तु ब्रह्मचारी भी हो, तन और मन से। जिनमें दैवी गुणों की धारणा हों, जिसकी दृष्टि और वृत्ति पवित्र हो, जिसका भोजन शुद्ध व सात्विक हो वही परमात्म मिलन मना सकते हैं। क्योंकि भगवान से मिलन मनाना कोई साधारण बात है क्या!

अब ये नियम क्यों ज़रूरी हैं, ये जान लेना भी अति आवश्यक है। बिना सात रोज़ कोर्स के आप क्या जानेंगे कि ईश्वर कौन है, कहाँ के रहने वाले हैं! क्योंकि ज्ञान में आने से

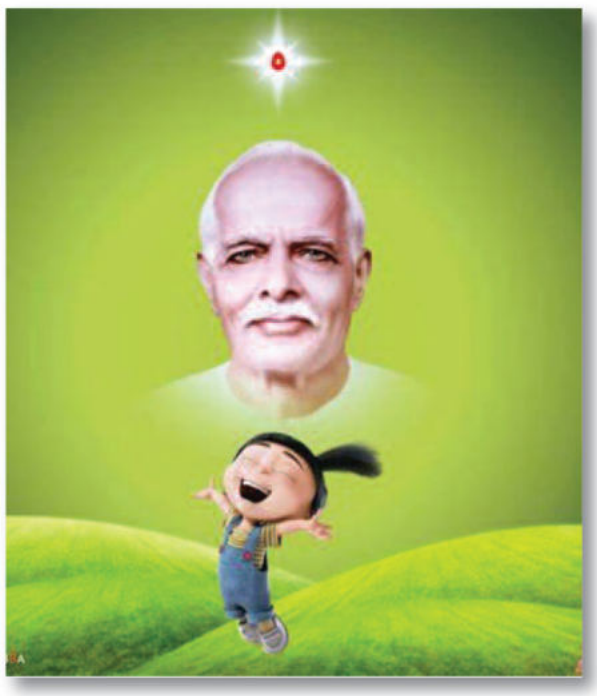

पहले तो हम यही मानते थे कि ईश्वर सर्वव्यापी है, वो नाम, रूप से न्यारे हैं, अकर्ता हैं। परन्तु अब ज्ञान में आने से हमें परमात्मा का नाम, रूप, कर्त्तव्य और रहने के स्थान का ज्ञान तो स्पष्ट हो ही गया है, साथ ही साथ ये भी स्पष्ट हो चुका है कि वह कैसे इस धरा पर अवतरित होते हैं और फिर कैसे हमें ज्ञान देते हैं। अगर ये सब बातें किसी मनुष्य को पूर्ण रीति स्पष्ट न हों तो उसको अव्यक्त बापदादा मिलन का कोई रस आ नहीं सकता। वे सोचेंगे सामने एक टेलीविजन चल रही है जिसमें एक बुजुर्ग सी दादी बैठ कुछ सुना रही हैं। क्योंकि परमात्मा को इन स्थूल नेत्रों से तो बिल्कुल नहीं देखा जा सकता। वह कोई पीताम्बरधारी बनकर तो आते नहीं, मगर उनको दिव्य चक्षु से देखा जा सकता है अर्थात् महसूस किया जा सकता है। जैसे हवा को, करंट को, सूरज की गर्मी को हम देख नहीं सकते उसी प्रकार हम भगवान को इन नेत्रों से देख नहीं सकते क्योंकि वह अति सूक्ष्म ते सूक्ष्म हैं लेकिन महसूस कर सकते हैं।

अब ये तो हुई मोटी-मोटी धारणाएं लेकिन कुछ सूक्ष्म धारणाएं भी अभी बाकी हैं जिनका अभ्यास अगर हम अपनी दिनचर्या में शामिल कर लें तो जैसे मानो हम सहज ही उड़ती कला का अनुभव करने लगेंगे। जब-जब प्रभु मिलन की बात आती है तब-तब एक कहावत अक्सर सुनने में आती है वो है-

धर्म के नाम पर खुद को
गुलाम मत बनाओ,
खुदा से मिलना है तो
दुनिया को छोड़कर आओ।

ये सच ही है कि हमें परमात्म मिलन के लिए दुनिया से किनारा तो करना ही होगा तब ही हम प्रभु मिलन का रस ले सकेंगे। अब अगर कोई सोचे कि हम पुरानी दुनिया भी नहीं छोड़ें और परमात्म आनंद का भी रस 100 ले लेवें तो ऐसे तो वे बिल्कुल सफल नहीं हो सकते। क्योंकि आप दो नौकाओं में पैर तो यकीनन नहीं रख सकते हैं और यदि रखते भी हैं, तो आप बीच में से चिर जाएंगे अर्थात् आप कहीं के नहीं रहेंगे। इसलिए अब पुरानी दुनिया से किनारा करने के लिए और सम्पूर्ण प्रभु मिलन का आनंद लेने के लिए हमें बीच-बीच में आत्मा का पाठ पक्का करना होगा, क्योंकि जब हम देह-अभिमानी होते हैं तो हमें देहधारी खींचते हैं और जब हम आत्म अभिमानी बनते हैं तब हमें सिर्फ परमात्मा की खींच होती हैं,ना की कोई देहधारी की। वैसे भी देह की ज़रूरतें अनेक हैं परन्तु आत्मा की ज़रूरत सिर्फ एक है और वो है परमात्मा की याद। जब तक हमारी दिल वस्तु, वैभव में अटकी होगी तब तक हमारी बुद्धि परमात्मा में लग नहीं सकती। इसलिए आप आज से ही स्वयं को बार-बार अपने आत्मिक स्वरूप में टिकाने का अभ्यास कीजिए जिससे दैवी गुणों की धारणा भी सहज होगी, वस्तु, वैभव से भी दिल स्वतः और सहज ही निकल जाएगा और आप प्रभु मिलन की मस्ती में भी झूमने लगेंगे।

- ब्र.कु. उर्वशी बहन,नई दिल्ली

जयपुर-राजापार्क(राज.)। इंदिरा आईवीएफ फर्टिलिटी सेंटर के सेवंत फाउंडेशन डे कार्यक्रम में दीप प्रज्वलित करते हुए डॉ. पूनम वर्मा,सीनियर कंसलटेंट इंदिरा आईवीएफ सेंटर, जयपुर सबज़ोन संचालिका ब्र.कु. पूनम दीदी, डॉ. मोहित शर्मा,एम.सी.एच. कार्डियक सर्जरी एस.एम.एस. मेडिकल कॉलेज,आर्ट ऑफ लिविंग, ब्र.कु. ज्योति बहन तथा अन्य।

नई दिल्ली। ब्रह्माकुमारीज़ के एडमिनिस्ट्रेशन विंग द्वारा जनकपुरी के आईआईटीएम कॉलेज में हरिनगर क्षेत्र में आयोजित 14 दिवसीय 'स्पीरिचुअल एम्पॉवरमेंट फॉर काइंडनेस एंड कम्पैशन' कैम्पेन के उद्घाटन अवसर पर डॉ. सुभाष कौशिक,डी.जी. होमियोपैथी, लेफ्टिनेंट कर्नल रंदीप हुंडल,एम.डी. इनोवेशन लिमिटेड, गणेश वाधवानी,डेप्युटी डायरेक्टर आईआईटीएम, अनिल खुराना चेयरमैन आयुष, आईआईटीएम के डायरेक्टर जे.सी. शर्मा व नवनीत कौर, लॉरेन्स रोड सेवाकेन्द्र संचालिका राजयोगिनी ब्र.कु. लक्ष्मी दीदी, ब्र.कु. उर्मिल दीदी,पालम विहार, ब्र.कु. शालू बहन व ब्र.कु. स्नेहा बहन,हरिनगर, ब्र.कु. प्रियंका बहन आदि उपस्थित रहे।

कालिम्पोंग-प.बंगाल। आध्यात्मिक कार्यक्रम के पश्चात् समूह चित्र में ब्र.कु. अल्का बहन, प्रसिद्ध नाटककार ललित गोले, डॉ. पी. विश्वास, गोर्खा दुःख निवारक सम्मेलन के अध्यक्ष उदय कुमाई, नेपाली साहित्य अध्ययन समिति के अध्यक्ष ज्ञान सुतार, प्रो. बलभद्र शर्मा, ब्र.कु. देवराज भाई, सिनेमा कलाकार अशोक तमंग, मनि ट्रस्ट की चेयरपर्सन श्रीमति रोशनी राई, गायक विनोद सुनाम, समाज सेविका अंजु ठकुरी तथा अन्य।